

B.A 6th Semester (Honours) Examination, 2020 (CBCS)

SUBJECT : SANSKRIT

PAPER : DSE-3

Time:

Full Marks: 60

The figures in the margin indicate full marks.

Candidates are required to give the answers in their own words as far as practicable.

प्रश्नपत्रेऽस्मिन् Group-‘A’ and Group-‘B’ इति विभागद्वयं वर्तते। प्रथमतः परीक्षार्थिभिः सावधानतया स्वरूपात् एको
विभागो निश्चितरूपेण करणीयः। अतः परं प्रश्नपत्रस्य निर्देशानुसारेण प्रश्नाः समाधेयाः।
[এই প্রশ্নপত্রে Group-‘A’ এবং Group-‘B’ এই দুটি বিভাগ আছে। প্রথমতঃ পরীক্ষার্থীরা সাবধানতাবশতঃ স্বপঠিত একটি
বিভাগ থেকে নিশ্চয়রূপে উত্তর দেবেন। এরপর প্রশ্নপত্রের নির্দেশানুসারে প্রশ্নগুলির উত্তর করণীয়।]

Group : A

[Fundamentals of Ayurveda]

1. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु यथाकामं षष्ठां प्रश्नानामुत्तरं प्रदेयम्। तेषु प्रश्नेषु द्वयं सरलसंस्कृतभाषया समाधेयम्। 5 × 6 = 30
(নীচের প্রশ্নগুলির মধ্যে যে কোনো ছয়টি প্রশ্নের উত্তর দাও। তার মধ্যে দুটি প্রশ্নের উত্তর সরল সংস্কৃত ভাষায় লেখ।)
 - a) आयुर्वेद इत्यस्य ग्रन्थस्य नामकरणस्य तात्पर्यं प्रतिपादयताम्। 5
(आयुर्वेद এই গ্রন্থের এইরূপ নামকরণের তাৎপর্য লেখ।)
 - b) आयुर्वेदशास्त्रं कीदृशशास्त्ररूपेण प्रसिद्धम्? भारतीयजनजीवने अस्य प्रभावः संक्षिप्ततया आलोच्यताम्। 2 + 3
(आयुर्वेदशास्त्र कीरूपेण शास्त्ररूपेण प्रसिद्ध? भारतीय जनजीवने एर प्रभाव संक्षेपे आलोचना कर।)
 - c) सुश्रुतः कः बभूव? आयुर्वेदे सुश्रुतसंहितायाः पुरुरः संक्षेपेण लिख्यताम्। 1 + 4
(सुश्रुत के हिलेन? आयुर्वेदे सुश्रुतसंहितार पुरुरः संक्षेपे लेख।)
 - d) जीवकः कः बभूव? आयुर्वेदे चिकित्सायां तस्य अवदानं संक्षेपेण उपस्थापयताम्। 1 + 4
(जीवक के हिलेन? आयुर्वेदे चिकित्सा पद्धतिते तार अवदान संक्षेपे उपस्थापना कर।)
 - e) आयुर्वेदतन्त्रस्य कानि अष्ट स्थानानि? तस्य स्थानप्रसङ्गे संक्षेपेण विवरणं प्रदेयम्। 2 + 3
(आयुर्वेदतन्त्रे आट्टि स्थान कि कि? तार स्थानप्रसङ्गे संक्षिप्त विवरण दाओ।)
 - f) अधोलिखितस्य कस्याचिदेकस्य सरलसंस्कृतेन व्याख्या कार्या। 5
(निम्नलिखित ये कोनो एकटिर सरलसंस्कृत भाषाय व्याख्या कर।)
[i] अम्लं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमिति।
[ii] प्राणाद्येव खण्डिमानि भूतानि जायन्ते।
 - g) भृशः कः बभूव? भृशं प्रति वरुणदेवः किम् उक्तवान् तैत्तिरीयोपनिषदि भृशवल्ली इत्यस्मिन् अध्याये? 1 + 4
(भृश के हिलेन? भृशं प्रति वरुणदेव कि वचन बलेहिलेन तैत्तिरीयोपनिषदे भृशवल्ली नामक अध्याये?)
 - h) यजुर्वेदस्य कतिविधः भागः? तैत्तिरीयोपनिषद् इति नामकरणस्य तात्पर्यं लिख्यताम्। 2 + 3
(यजुर्वेदेर कतिविध भाग विद्यमान? तैत्तिरीयोपनिषद् एरूप नामकरणे कारण कि ता लेख।)
2. अधोलिखितेषु प्रश्नत्रयं समाधेयम्।
(निम्नलिखित प्रश्नগুলির মধ্যে যে কোনো তিনটি প্রশ্নের উত্তর করণীয়।) 10 × 3 = 30
 - a) आयुर्वेदस्य अष्टाङ्गानि संक्षेपेण निरूपणीयानि। 4 + 6
(अष्टाङ्ग आयुर्वेदेर अष्टाङ्गगुलि उल्लेखपूर्वक तार संक्षिप्त परिचय दाओ।)
 - b) के के उपवेदाः? आयुर्वेदः उपवेदस्य मध्ये अन्तर्गतः न वा? आयुर्वेदस्य दोषत्रयम् यथायथभावेन लिख्यताम्। 2 + 2 + 6
(উপবেদ কটি? आयुर्वेद कि उपवेदेर मध्ये अन्तर्गत? आयुर्वेदेर दोषत्रय यथायथभावे लेख।)

- c) चरकसंहिता का ? चिकित्साशास्त्रे चरकसंहितायाः प्रयोजनम् आलोच्यताम्। 2 + 8
(चरकसंहिता बलते कि बोध ? चिकित्साशास्त्रे चरकसंहितार प्रयोजन आलोचना कर।)
- d) 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते'—कं प्रति कस्य वचनमिदम् ? अनुवाकवाक्यस्य अन्तर्निहितः भावः स्पष्टीक्रियताम्। 2 + 8
('यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते'—कार प्रति के এই वचन दियेछे ? अनुवाक वाक्यটির अन्तर्निहित भाव स्पष्ट करे लेख।)
- e) 'स तपोऽतप्यत'—इत्यस्मिन् वाक्ये 'सः' इत्यनेन कः निर्दिष्टः ? अत्र का तपस्यापदवाच्या ? कः कस्योपदेशं निधाय कथं कथं तपस्याकार्यं स्थिरीकृतं तदेव सुस्पष्टतया विक्रियताम्। 1 + 2 + 7
'स तपोऽतप्यत'—এই প্রদত্ত বাক্যে 'সঃ' এই শব্দের দ্বারা কে সূচিত হয়েছে? এখানে কোন্ তপস্যাকে বোঝানো হয়েছে? কে কার উপদেশ শ্রবণ করে কেন এইরূপ তপস্যাকার্যের বিষয়টি স্থির করেছিলেন তা সংক্ষেপে লেখ।

Group : B
[Environmental Awareness in Sanskrit]

1. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु यथाकामं यथा प्रश्नानामुत्तरं प्रदेयम्। तेषु प्रश्नेषु द्वयं सरलसंस्कृतभाषया समाधेयम्। 5 × 6 = 30
(নীচের প্রশ্নগুলির মধ্যে যে কোনো ছয়টি প্রশ্নের উত্তর দাও। তার মধ্যে দুটি প্রশ্নের উত্তর সরল সংস্কৃত ভাষায় লেখ।)
- a) मनुसंहितायाः रचयिता कः ? अस्य ग्रन्थस्य कति अध्यायाः विद्यन्ते ? युष्माकं पाठ्यांशान्तर्गते द्वितीयेऽध्याये भोजनविधिविषये किमालोचितं धर्मशास्त्रकारेण मनुना ? 1 + 2 + 2
(মনুসংহিতার রচয়িতা কে? এই গ্রন্থের কতিবিধ অধ্যায় আছে? তোমাদের পাঠ্যাংশের অন্তর্গত দ্বিতীয়ে অধ্যায়ে ভোজনবিধি বিষয়ে ধর্মশাস্ত্রকার মনু কি আলোচনা করেছেন?)
- b) सरलसंस्कृतभाषया एका व्याख्या कार्या। 5 × 1
(सरल संस्कृते একটি व्याख्या कर।)
[i] श्रोतसां भेदको यश्च तेषां वरुणं रतः।
गृहसंभेदको दूतो वृष्णरोपक एव च।।
[ii] वनस्पतीनां सर्वेषामुपभोगो यथा यथा।
तथा तथा दमः कार्यो हिंसायामिति धारणा।।
- c) मनुसंहिता इत्यस्मिन् धर्मशास्त्रग्रन्थे आचार्येण मनुना चतुर्थे अध्याये वासकरणविधाने किमुपदिष्टम् ? 5
(मनुसंहिता এই ধর্মশাস্ত্রগ্রন্থে আচার্য মনু চতুর্থ অধ্যায়ে বসবাস করার নিমিত্তে যে উপদেশ দিয়েছেন তা লেখ।)
- d) मनुसंहितायाः युष्माकं पाठ्यांशे जलदूषणपरिहारय नित्यकर्मणां विधिविषये प्रसङ्गे धर्मशास्त्रकारेण मनुना किमुलिखितं तदेव संक्षेपेण विव्रियताम्। 5
(তোমাদের পাঠ্যাংশ মনুসংহিতা গ্রন্থে ধর্মশাস্ত্রকার মনু জলদূষণ পরিহার বিষয়ে নিত্যকর্মগুলির বিধিনিষেধে কি উল্লেখ করেছেন তা সংক্ষেপে লেখ।)
- e) 'नातिप्रगे नातिसायं न सायं प्रातराशितः'—इत्यस्य श्लोकपादस्य ताৎपर्यं लिख्यताम्। 5
(নাত্তিপ্রগে নাতিসায়ং ন সায়ং প্রাতরাশিতঃ—ইত্যস্য শ্লোকপাদস্য তাৎপর্যং লিখ্যতাম্।)
- f) 'सत्यपूतां वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत्'—इत्यनेन श्लोकपादेन किं विधानम् आचार्येण-मनुना प्रवर्तितं तदेव स्पष्टीक्रियताम्। 5
(সত্যপূতাং বদেদ্ভাচং মনঃপূতং সমাচরেৎ—ইত্যনেন শ্লোকপাদেন কিং বিধানম্ আচার্যেণ-মনুনা প্রবর্তিতং তদেব স্পষ্টীক্রিয়তাম্।)
- g) पुराणस्य लक्षणं किम् ? महापुराणानां संख्यानसारेण कतिविधाः प्रभेदाः वर्तन्ते ? वराहपुराणं कस्मिन् विभागे अन्तर्गतं स्वैशिशिष्ट्यां तदेव लिख्यताम्। 2 + 2 + 1
(পুরাণের লক্ষণ কি? মহাপুরাণগুলির সংখ্যানুসারে কত প্রকার প্রভেদ রয়েছে? নিজ বৈশিষ্ট্যে বরাহপুরাণ কোন বিভাগে অন্তর্গত তা লেখ।)
- h) 'याज्ञवल्क्यसंहिता' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कः ? ग्रन्थमध्ये कतिविधाः अध्यायाः विद्यन्ते ? तेषु अध्यायेषु युष्माकं पाठ्यांशस्य नाम लिख्यताम्। 1 + 2 + 2
('যাজ্ঞবল্ক্যসংহিতা' ইত্যস্য গ্রন্থস্য রচয়িতা কঃ? গ্রন্থমধ্যে কতিবিধাঃ অধ্যায়াঃ বিদ্যন্তে? তेषু অধ্যায়েষু যুষ্মাংকং পাঠ্যাংশস্য নাম লিখ্যতাম্।)

2. অধোলিখিতেষু প্রশ্নত্রয়ং সমাধেয়ম্।

10×3=30

(নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির মধ্যে যে কোনো তিনটি প্রশ্নের উত্তর করণীয়।)

- a) মনুসংহিতায়াঃ চতুর্থে অধ্যায়ে বস্ত্রালঙ্কারভোজনস্নানাদিবিষয়মাশ্রিত্য সাধারণবিধীনাং কো কো মার্গঃ আচার্যেণ মনুনা উল্লিখিতঃ ? (মনুসংহিতার চতুর্থ অধ্যায়ে বস্ত্রালঙ্কারভোজনস্নানাদিবিষয়ের উল্লেখ করে সাধারণ বিধি সম্পর্কে যে মার্গের নির্দেশ দিয়েছেন আচার্য মনু তা লেখ।)
- b) সত্যং ক্রয়াৎ প্রিয়ং ক্রয়ান্ন ক্রয়াৎ সত্যমপ্রিয়ম্।
প্রিয়ঞ্চ নানৃতং ক্রয়াদেব ধর্মঃ সনাতনঃ।।
প্রদত্তশ্লোকস্য প্রসঙ্গেন সহ যথাযথং তাৎপর্যং লিখ্যতাম্।
(প্রদত্ত শ্লোকটির প্রসঙ্গসহ যথাযথ তাৎপর্য লেখ।)
- c) 'মনুসংহিতা'—ইতি ধর্মশাস্ত্রস্য একাদশে অধ্যায়ে উপপাতকবিষয়ম্ অনুসৃত্য সংক্ষেপেণ প্রতিপাদ্যতাম্।
(‘মনুসংহিতা’-এই ধর্মশাস্ত্রের একাদশ অধ্যায়ে উপপাতক বিষয়ে যা আলোচনা তা প্রতিপাদন কর।)
- d) বরাহপুরাণস্য জ্যেষ্ঠবচনে যো বিষয়ঃ সমায়ুক্তঃ স বর্ণনীয়ঃ।
(তোমাদের পাঠ্যাংশের অন্তর্গত বরাহপুরাণে জ্যেষ্ঠবচনে যে বিষয় বলা হয়েছে তা যথাযথভাবে লেখ।)
- e) যাজ্ঞবল্ক্যসংহিতায়াঃ দ্বিতীয়ে অধ্যায়ে যৎ আলোচিতং তৎ স্পষ্টীকুরুঃ।
(যাজ্ঞবল্ক্যসংহিতার দ্বিতীয় অধ্যায়ে তোমাদের পাঠ্যাংশে যে বিষয় আলোচনা করা হয়েছে তা স্পষ্ট করে লেখ।)